# आवश्यक निवेदन

प्रस्तुत अध्ययन सामग्री, तालिकाएँ एवं चित्र आदि श्रीमती सारिका विकास छाबड़ा द्वारा तैयार किये गए हैं |

इनका अन्यत्र एवं अन्य भाषा में उपयोग करने के पूर्व उनसे अनिवार्यतः संपर्क कर लें |



Presentation Developed By:

Smt Sarika Vikas Chhabra

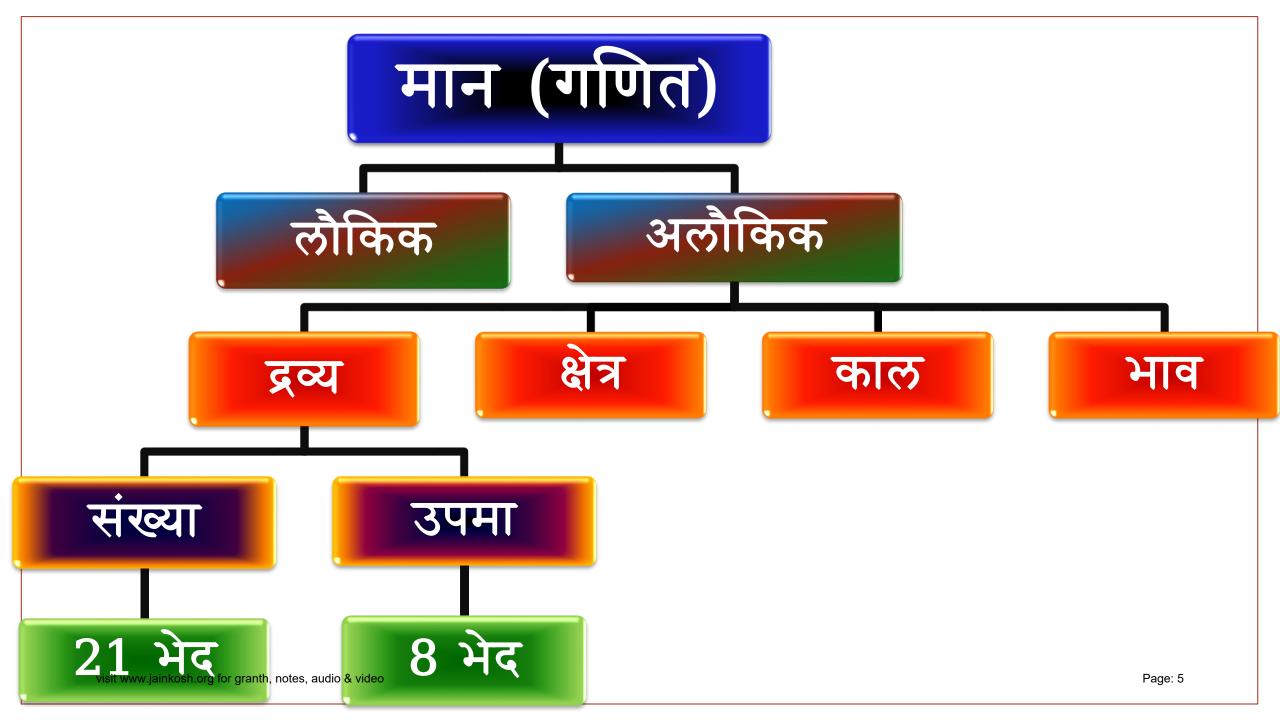
### गाथा 1: मंगलाचरण

# सिद्धं सुद्धं पणिमय जिणिंदवरणेमिचंदमकलंकं। गुणरयणभूसणुदयं जीवस्स परूवणं वोच्छं॥

- जो सिद्ध, शुद्ध एवं अकलंक हैं एवं
- जिनके सदा गुणरूपी रह्नों के भूषणों का उदय रहता है,
  - ऐसे श्री जिनेन्द्रवर नेमिचंद्र स्वामी को नमस्कार करके
    - जीव की प्ररूपणा को कहूंगा।

### अलौकिक गणित क्यों पढ़ें?

- जिनागम को समझने के लिये
- •तीन लोक की विशालता को समझने के लिये
- आत्मा अनंत गुणों की खान है, तो वह अनंत कितना विशाल है
- •संसार परिभ्रमण अर्थात् 5 परावर्तन को समझने के लिये ...इत्यादि



# संख्या मान

असंख्यात अनंत संख्यात असंख्याता परित परित अनंतानंत युक्त उ. संख्यात ज. म. उ. ज. म. ज. म. उ. म. उ. ज. उ. ज. visit www.jainkosh.org for granth, notes, audio &

#### <mark>संख्यात</mark> -

• जो मित-श्रुतज्ञान का विषय हो असंख्यात -

• जो मिति,श्रुत ज्ञान का विषय तो नहीं है लेकिन अविधिज्ञान और मन:पर्यय ज्ञान का विषय हो

जो मित, श्रुत, अवधि, मन:पर्यय ज्ञान का विषय नहीं है लेकिन केवलज्ञान का विषय हो

21 में से 8 राशियां हमें निकालनी है-जघन्य संख्यात • 2 जघन्य परितासंख्यात • कुण्ड विधान जघन्य युक्तासंख्यात • विरलन देय जघन्य असंख्यातासंख्यात • वर्ग जघन्य परितानंत • शलाका त्रय निष्ठापन जघन्य युक्तानंत • विरलन देय जघन्य अनंतानंत • वर्ग • शलाका त्रय निष्ठापन Page: 8

### शेष राशियाँ ?

- शेष उत्कृष्ट राशियां आगे के जघन्य में से 1 घटाने पर प्राप्त होती हैं |
- जघन्य और उत्कृष्ट के बीच की सब राशियां मध्यम भेद हैं |

### संख्यात

जघन्य संख्यात

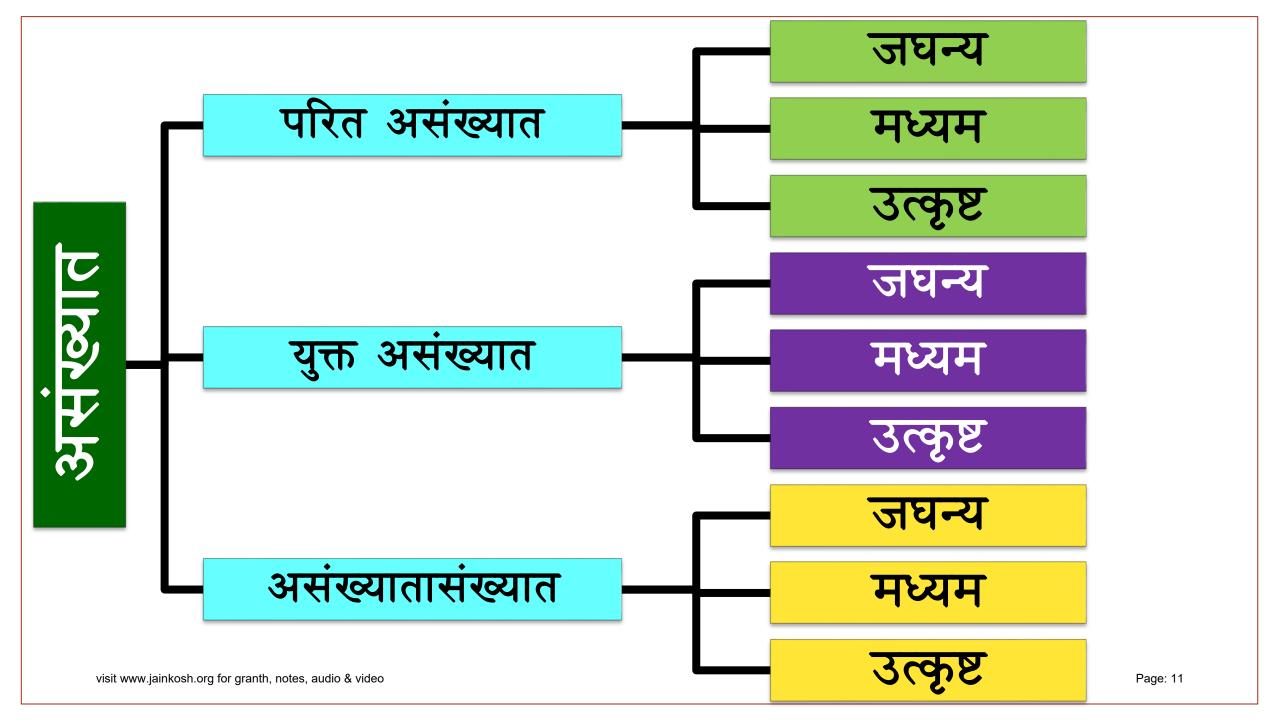
=2

मध्यम संख्यात

= 3 से (उत्कृष्ट संख्यात - 1)

उत्कृष्ट संख्यात

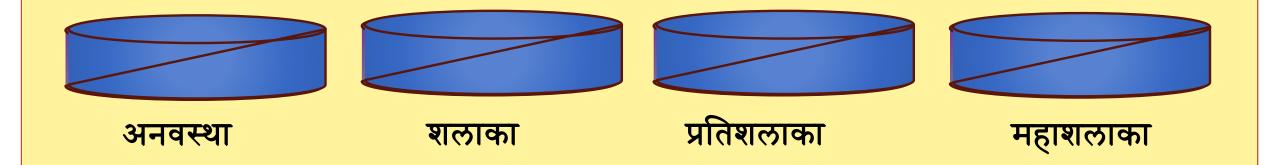
= जघन्य परित असंख्यात - 1



# जघन्य परित असंख्यात निकालने की विधी

### जघन्य परित असंख्यात

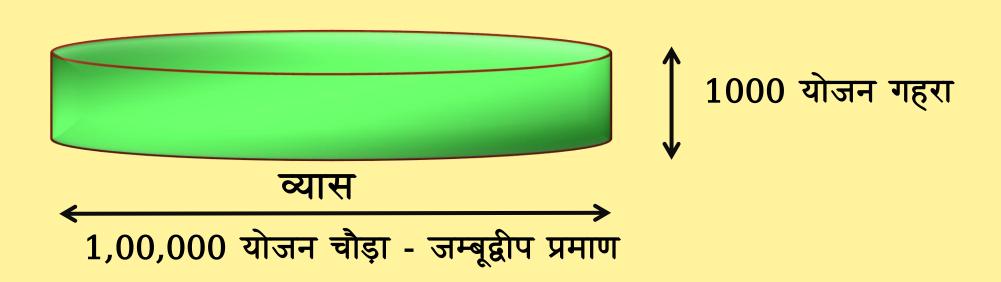
- कुण्ड विधान द्वारा-
- 4 कुण्ड बनायेंगें अनवस्था, शलाका, प्रतिशलाका, महाशलाका



# कुण्ड क्यों?

- >अनवस्था कुण्ड = जो अवस्थित न रहे, जिसकी चौड़ाई (व्यास) बदलता जाये
- >शलाका कुण्ड = अनवस्था कुण्ड की गिनती के लिये
- >प्रतिशलाका कुण्ड = शलाका कुण्ड की गिनती के लिये
- >महाशलाका कुण्ड = प्रतिशलाका कुण्ड की गिनती के लिये

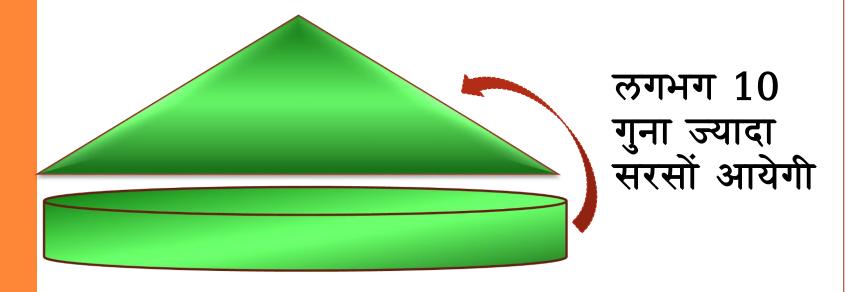
# प्रत्येक कुण्ड का प्रमाण



2 मील = 1 कोस 2000 कोस = 1 योजन 1 योजन = 2000 x 2 मील = 4000 मील 1 लाख योजन = 1 लाख x 4000 = 40 करोड़ मील

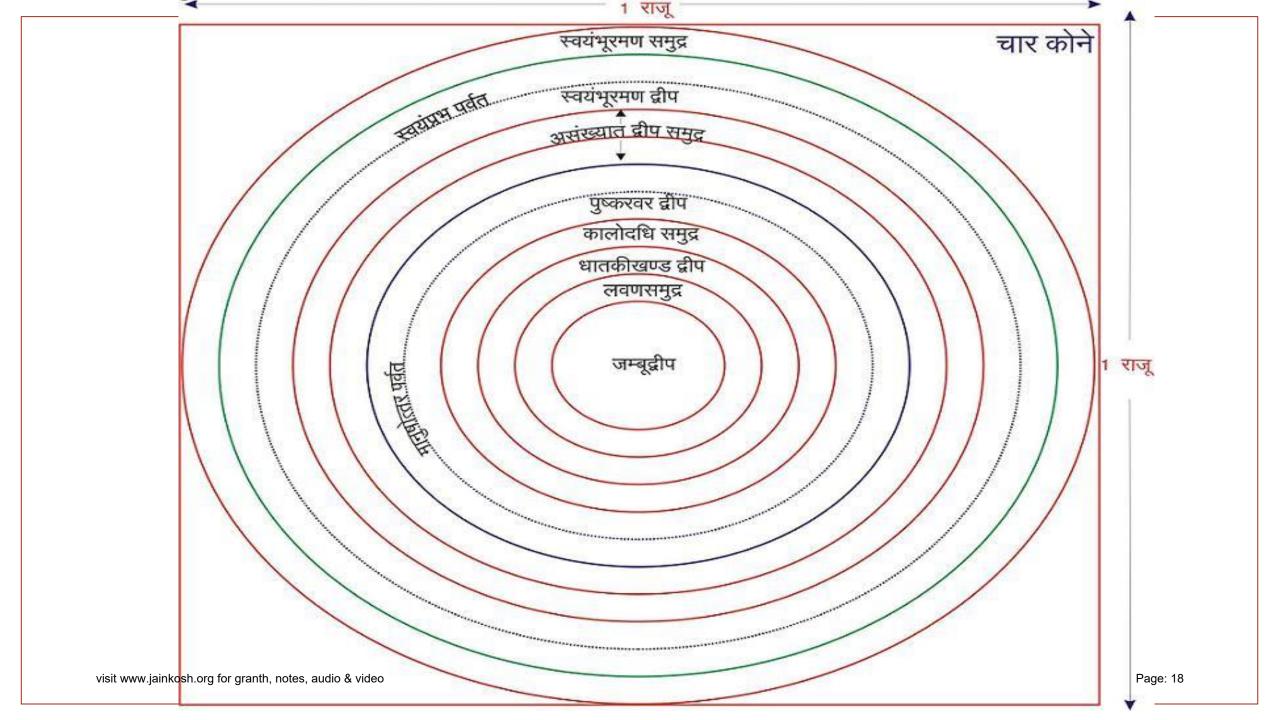
- अनवस्था कुण्ड में सरसों के दाने भरेंगें (45 अंक प्रमाण)
- फिर ऊपर तक भी भरना है जब तक पिरामिड (शिखाऊ) जैसा ना बन जाये (46 अंक प्रमाण)

### जघन्य परित असंख्यात

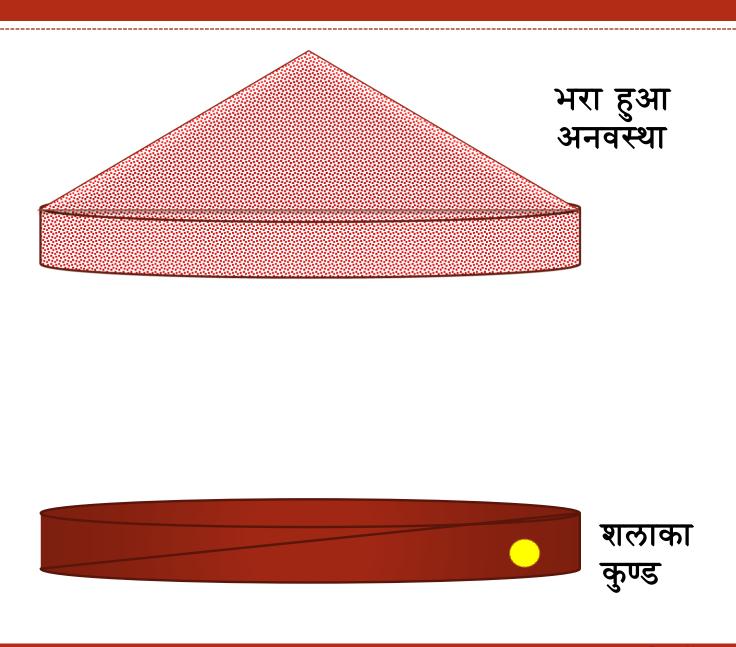


### कुल सरसों का प्रमाण

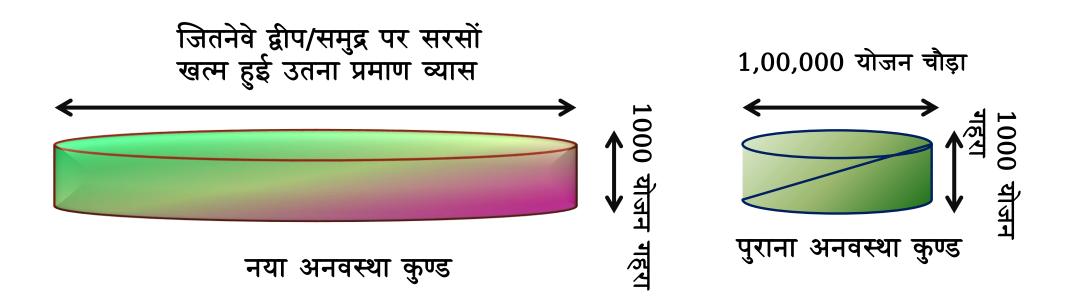
- 1997,1129384,5131636,3636363,636363636363636363636 $\frac{4}{11}$
- एक हजार नौ सौ सत्तानवे कोटि कोटि कोटि कोटि कोटि, ग्यारह लाख उनतीस हजार तीन सौ चौरासी कोटि कोटि कोटि कोटि कोटि, इक्यावन लाख इकतीस हजार छह सौ छत्तीस कोटि कोटि कोटि कोटि, छत्तीस लाख छत्तीस हजार तीन सौ त्रेसठ कोटि कोटि कोटि, तरेसठ लाख तरेसठ हजार छह सौ छत्तीस कोटि कोटि छत्तीस लाख छत्तीस हजार तीन सौ त्रेसठ कोटि तरेसठ लाख तरेसठ हजार छह सौ छत्तीस तथा चार बटे ग्यारह



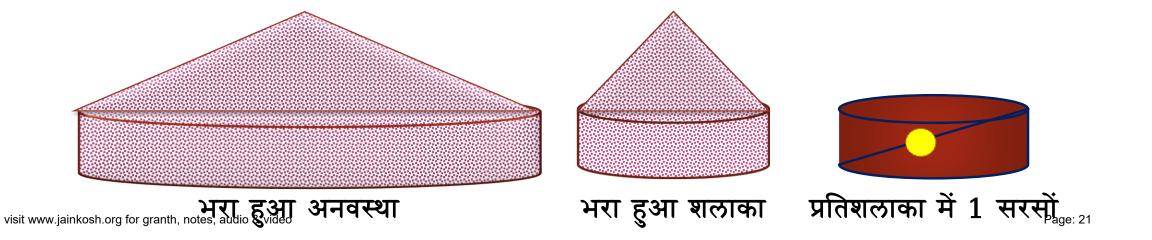
- यह अनवस्था कुण्ड एक बार भर गया, अतः शलाका कुण्ड में एक सरसों डालिये
- अब 1-1 सरसों का दाना निकालकर एक द्वीप, एक समुद्र में डालेंगे जब तक कि सारी सरसों समाप्त ना हो जाये



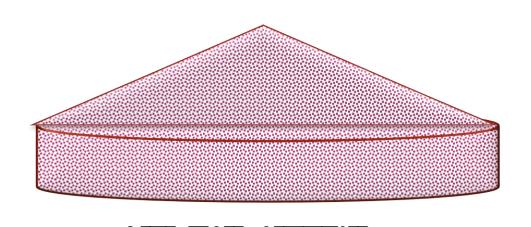
### • जिस द्वीप पर सरसों खत्म हुई, अब उसका जो व्यास (diameter) होगा उतने व्यास वाला और 1000 योजन गहरा अनवस्था कुण्ड बनायेंगे

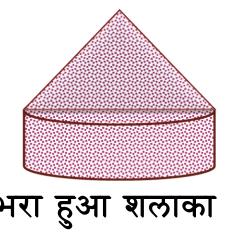


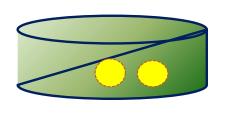
- >नये अनवस्था कुण्ड को फिर सरसों से शिखाऊ भरेंगें
- >शलाका कुण्ड में अलग से एक सरसों का दाना डालेंगे
- >और एक-एक सरसों द्वीप-समुद्र में डालते जायेंगें जब तक कि अनवस्था कुण्ड खाली ना हो जाये।
- >ये process करते-करते जब शलाका कुण्ड शिखाऊ तक भर जायेगा, तब 1 सरसों प्रतिशलाका कुण्ड में डालेंगे



>अब शलाका कुण्ड को खाली कर, बढ़ते हुए व्यास वाले अनवस्था कुण्ड बनाकर, शलाका कुण्ड को भरने की same process दोहराते हैं >जब दूसरी बार शलाका कुण्ड भरता है तब एक और सरसों प्रतिशलाका में डालेंगें

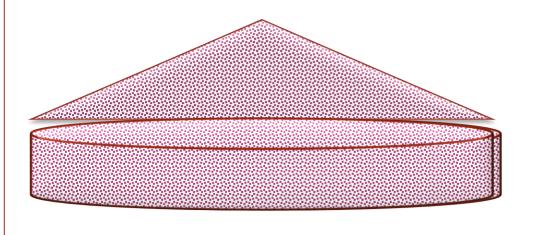






प्रतिशलाका में 1 और सरसों

- >ये पूरी process प्रतिशलाका कुण्ड भरने तक करेंगें
- >जब प्रतिशलाका कुण्ड भर जाय, तब एक सरसों महाशलाका कुण्ड में डालेंगें



भरा हुआ अनवस्था



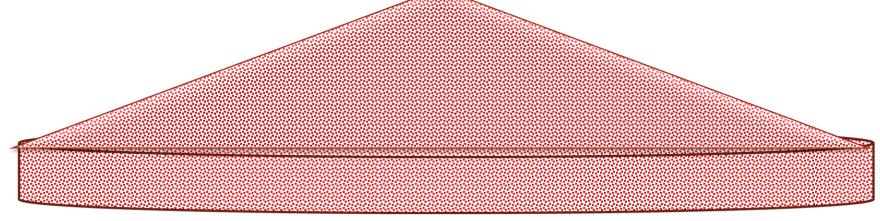




visit www.jainkosh.org for granth, notes, audio & video

Page: 23

- >अब शलाका, प्रतिशलाका खाली कर same process करते हैं
- >जब शलाका कुण्ड भर जाय तब एक सरसों प्रतिशलाका में डालेंगें
- >ऐसा करते-करते जब प्रतिशलाका भर जाय तब एक दूसरी सरसों महाशलाका में डालेंगें
- >ऐसा करते-करते जब महाशलाका कुण्ड भर जायेगा उस समय प्रतिशलाका, शलाका और अनवस्था कुण्ड भी भरा हुआ प्राप्त होगा
- >इस अंतिम अनवस्था कुण्ड में जितनी सरसों का प्रमाण होता है वह जघन्य परितासंख्यात संख्या है



अंतिम अनवस्था कुण्ड की सरसों का प्रमाण = जघन्य परितासंख्यात

### जघन्य युक्त असंख्यात

(विरलन देय राशि विधान)

- विरलन = जितनी बार बिखेरा जाये
- •देय = जिसे बिखेरा जाये
- जैसे विरलन = 5, देय = 2
- तो विरलन-देय प्राप्त राशि =  $2 \times 2 \times 2 \times 2 \times 2 = 32$
- अन्य प्रकार से = (देय) विरलन
  - 0याने  $2^5 = 32$

# जघन्य युक्त असंख्यात

# ज परितासंख्यात

- देय = जघन्य परितासंख्यात
- विरलन = जघन्य परितासंख्यात
- विशेष : जघन्य युक्तासंख्यात = 1 आवली के समय

# जघन्य युक्त असंख्यात

- ज परितासंख्यात x ज परितासंख्यात x ज परितासंख्यात .....
- x ज परितासंख्यात x ज परितासंख्यात

ज परितासंख्यात बार

### जघन्य असंख्यातासंख्यात

# जघन्य युक्त असंख्यात

विशेष: ज. असंख्यातासंख्यात = प्रतरावली (याने आवली x आवली)

# जघन्य परित अनंत निकालने की विधी

### शलाका त्रय निष्ठापन

- तीन राशियां स्थापित करनी-
  - 1. विरलन 2. देय 3. शलाका
- एक बार विरलन-देय करके शलाका में से एक घटाना।
  - ्हर बार विरलन देय विधान करने पर एक-एक शलाका कम-कम करते जाना
- जब शलाका शून्य हो जाय तो वह एक बार निष्ठापन है।
- जो अंत में राशि आयेगी वह महाराशि होगी।

### शलाका त्रय निष्ठापन

- •इस महाराशि को पुनः शलाका, विरलन, देय रूप रखना।
- •पुनः जब तक शलाका राशि समाप्त नहीं हो जाती, तब तक विरलन-देय विधान से राशियां निकालना।
- •जब शलाका शून्य हो जाय तो वह दूसरी बार निष्ठापन है।
- •जो अंत में राशि आयेगी वह महा-महाराशि होगी।

### शलाका त्रय निष्ठापन

- इस महा-महाराशि को पुनः शलाका, विरलन, देय रूप रखना
- •पुनः जब तक शलाका राशि समाप्त नहीं हो जाती, तब तक विरलन-देय विधान से राशियां निकालना ।
- जब शलाका शून्य हो जाय तो वह तीसरी बार निष्ठापन है।
- जो अंत में महा-महा-महाराशि होगी, वह मूल राशि का शलाका-त्रय निष्ठापन से प्राप्त राशि कहलाती है।

### उदहारण - 2 का शलाका त्रय निष्ठापन

#### एक बार शलाका निष्ठापन

विरलन	देय	शलाका	प्राप्त राशि	
2	2	2	$2 \times 2 = 4$	2-1 = 1
4	4	1	4x4x4x4 = 256	1-1 = 0

### दूसरी बार शलाका निष्ठापन

विरलन	देय	शलाका	प्राप्त राशि	
256	256	256	256 <sup>256</sup>	256-1 =255
256 <sup>256</sup>	256 <sup>256</sup>	255		

### उदहारण - 2 का शलाका त्रय निष्ठापन

### तीसरी बार शलाका निष्ठापन

विरलन	देय	शलाका	प्राप्त राशि	
महामहाराशि	महामहाराशि	महामहाराशि	महामहामहाराशि	शलाका -1
महामहामहाराशि	महामहामहाराशि	महामहाराशि-1	महामहामहाराशि	(शलाका -1) -1
				• • • • • •
•••	••••	••••	 महामहामहामहाराशि	शलाका= 0
visit www.jainkosh.org for granth, r	ptes, audio & video			Page: 34



सक्षय अनंत

अक्षय अनंत

खर्च करते-करते जिस राशि का अंत आ जाय

visit www.jainkosh.org for granth, notes, audio & video

नवीन वृद्धि नहीं होने पर भी खर्च करते-करते जिस राशि का अंत नहीं आवे

Page: 35

### जघन्य परित अनंत

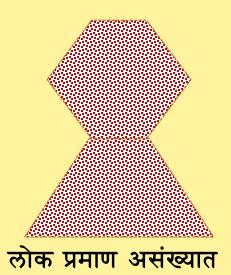
- 1. जघन्य असंख्यातासंख्यात का शलाका त्रय निष्ठापन (=A)
- 2. 6 राशि इसमें जोड़ें (=B) :
  - (1) 1 जीव के प्रदेशों की संख्या:= लोक प्रमाण असंख्यात
  - (2) धर्म द्रव्य के प्रदेशों की संख्या = लोक प्रमाण असंख्यात
  - (3) अधर्म द्रव्य के प्रदेशों की संख्या = लोक प्रमाण असंख्यात
  - (4) लोकाकाश के प्रदेशों की संख्या =लोक प्रमाण असंख्यात
  - (5) अप्रतिष्ठित प्रत्येक वनस्पति जीवों की संख्या=असंख्यात लोक प्रमाण
  - (6) सप्रतिष्ठित प्रत्येक वनस्पति की संख्या=असंख्यात लोक प्रमाण

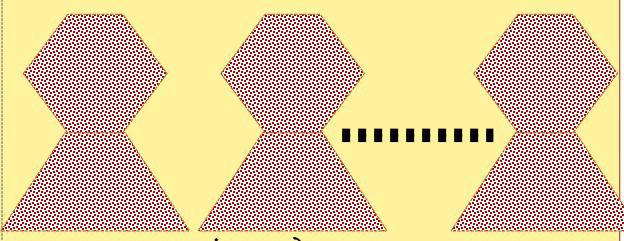
#### असंख्यात लोक प्रमाण और लोक प्रमाण असंख्यात में अंतर

#### लोक प्रमाण असंख्यात =

#### असंख्यात लोक प्रमाण =

• लोकाकाश में जितने प्रदेश हैं वे, i.e. असंख्यात • लोकाकाश के असंख्यात प्रदेशों से असंख्यात गुणा





#### जघन्य परित अनंत

- 3. B का शलाका त्रय निष्ठापन करें = C
- 4. इसमें 4 राशि जोड़ें, D = :
  - (1) 1 कल्पकाल के समय = 20 कोड़ा-कोड़ी सागर
  - (2) स्थिति-बंध अध्यवसाय स्थानों की संख्या = असंख्यात लोक प्रमाण
  - (3) अनुभाग-बंध अध्यवसाय स्थानों की संख्या = असंख्यात लोक प्रमाण
  - (4) मन, वचन, काय के अविभाग-प्रतिच्छेदों की संख्या=असंख्यात लोक प्रमाण
- 5. D का शलाका त्रय निष्ठापन = जघन्य परित अनंत

## स्थितिबंध अध्यवसाय स्थान

• स्थिति बंध के कारणभूत जीवों के परिणामों के स्थान (संख्या)

## <u>अनुभागबंध</u> अध्यवसाय स्थान

• अनुभाग बंध के कारणभूत जीवों के परिणामों के स्थान (संख्या)

$$A = \left\{ \begin{array}{c} \\ \end{array} \right.$$

• (ज. असंख्यातासंख्यात) का शलाका त्रय निष्ठापन

$$B = \left\{ \begin{array}{c} \\ \end{array} \right.$$

• A + 6 राशि

$$C = \left\{ \right.$$

• (B) का शलाका त्रय निष्ठापन

$$D = \left\{ \right.$$

• C + 4 राशि

जघन्य परितानंत

• (D) का शलाका त्रय निष्ठापन

## जघन्य युक्त अनंत

जघन्य परित अनंत

अभव्य जीव राशि जघन्य युक्त अनंत प्रमाण है

#### जघन्य अनंतानंत

जघन्य अनंतानंत = (जघन्य युक्त अनंत)<sup>2</sup>

## उत्कृष्ट अनंतानंत

- 1) जघन्य अनंतानंत का शलाका त्रय निष्ठापन (=A)
- 2) अब इस महाराशि में 6 राशि जोडें B=:

```
अनंत 1) सिद्धों की राशि
```

- 2) निगोद राशि {संसार राशि –(पृथ्वीकायादी चार + प्रत्येक वनस्पति + त्रस राशि )}
  - 3) प्रत्येक वनस्पति सहित निगोद राशि {संसार राशि -(पृथ्वीकायादी चार+ त्रस राशि )}
- 4) पुद्गलों की संख्या
- 5) तीन काल के समय
  - '
    6) आकाश के प्रदेशों की संख्या

## उत्कृष्ट अनंतानंत

- 3) B का शलाका त्रय निष्ठापन = C महाराशि
- 4) इसमें धर्म, अधर्म द्रव्य के अगुरुलघु गुण के अविभाग-प्रतिच्छेदों की संख्या जोड़ें = D महामहाराशि
- 5) D महामहाराशि का शलाका त्रय निष्ठापन करें = E
- 6) F = केवलज्ञान के अविभाग-प्रतिच्छेदों की संख्या E जहां F + E = केवलज्ञान के अविभाग-प्रतिच्छेदों की संख्या= उत्कृष्ट अनंतानंत

$$A = \left\{ \begin{array}{c} \end{array} \right.$$

• जघन्य अनंतानंत का शलाका त्रय निष्ठापन

$$B = \left\{ \begin{array}{c} \end{array} \right.$$

• A + 6 राशि

$$C = \left\{ \right.$$

• B का शलाका त्रय निष्ठापन

$$D = \left( \begin{array}{c} \end{array} \right)$$

• C + 2 राशि

$$E = \left\{$$

• D का शलाका त्रय निष्ठापन

$$F =$$

• केवलज्ञान के अविभाग-प्रतिच्छेदों की संख्या - E

उत्कृष्ट अनंतानंत =

 $\bullet F + E$ 

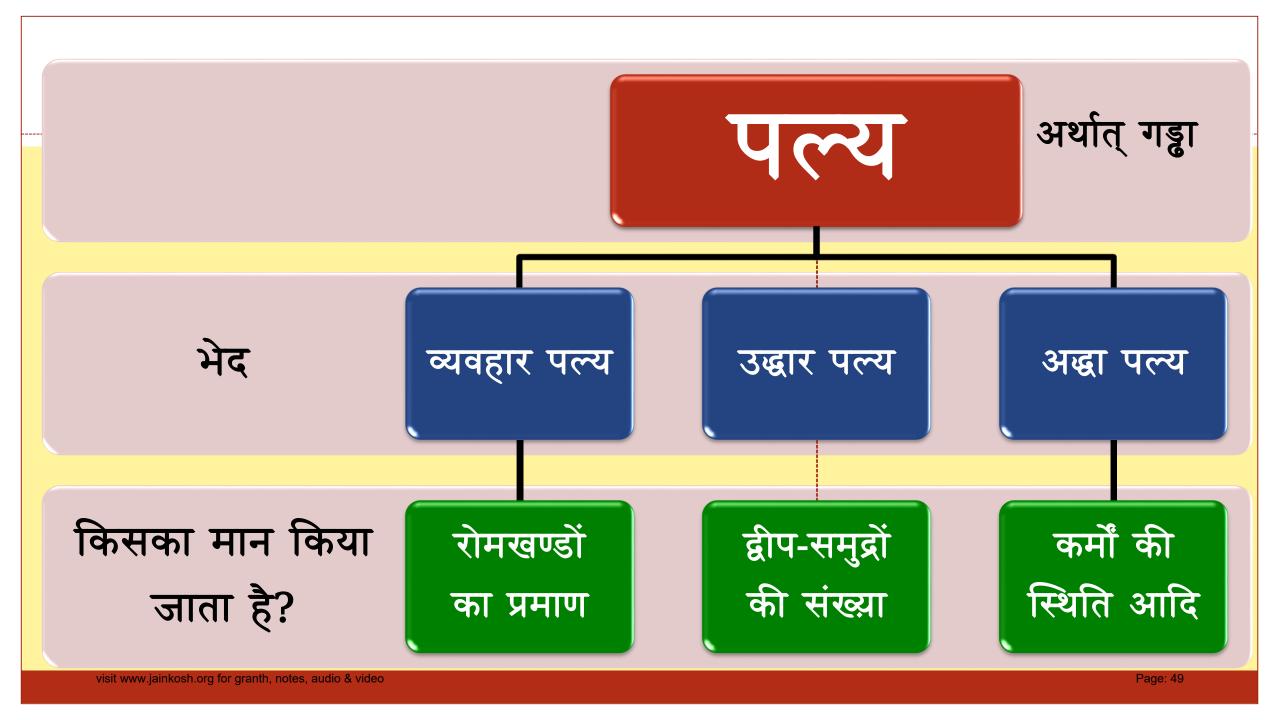
मान	भेद	प्रमाण
संख्यात	जघन्य संख्यात	2
	उत्कृष्ट संख्यात	जघन्य परित असंख्यात – 1
असंख्यात	जघन्य परितासंख्यात	अंतिम अनवस्था कुण्ड प्रमाण सरसों
	उत्कृष्ट परितासंख्यात	जघन्य युक्त असंख्यात – 1
	जघन्य युक्त असंख्यात	(ज परितासंख्यात <sup>) ज परितासंख्यात</sup>
	उत्कृष्ट युक्त असंख्यात	जघन्य असंख्यातासंख्यात -1
	जघन्य असंख्यातासंख्यात	(जघन्य युक्त असंख्यात) <sup>2</sup>
	उत्कृष्ट असंख्यातासंख्यात	(जघन्य परितानंत) -1

मान	भेद	प्रमाण
अनंत	जघन्य परित अनंत	_
	उत्कृष्ट परित अनंत	जघन्य युक्त अनंत -1
	जघन्य युक्त अनंत	(जघन्य परित अनंत) जघन्य परित अनंत
	उत्कृष्ट युक्त अनंत	जघन्य अनंतानंत -1
	जघन्य अनंतानंत	(जघन्य युक्त अनंत) <sup>2</sup>
visit www.jainkosh.org for granth, not	उत्कृष्ट अनंतानंत	केवलज्ञान के अविभाग-प्रतिच्छेदों की संख्या

#### उपमा मान

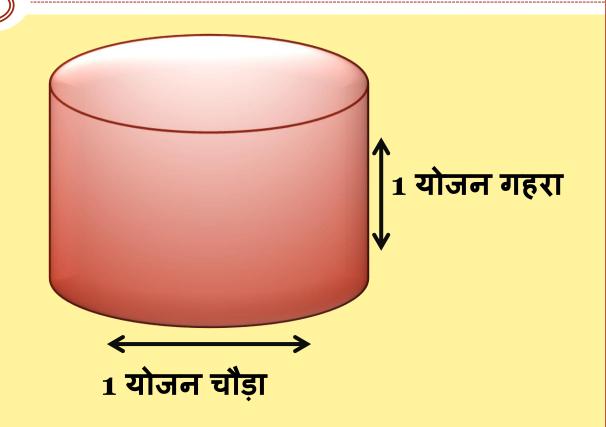
गणना के द्वारा कहने में असमर्थ ऐसी जो राशि, उसका किसी उपमा के द्वारा प्रतिपादन करना



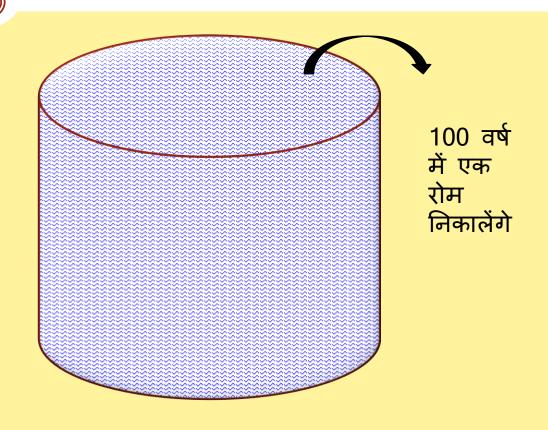


## व्यवहार पल्य

- 1 योजन प्रमाण गहरा और चौड़ा गड़ा करना
- उत्तम भोगभूमि में जन्में 7 दिन तक के मेंढ़े के बालों के अग्रभाग से (जिनकी लंबाई, चौड़ाई समान हो) उस गड्ढे को ठोस (flat) भरना
- जितने रोमखण्ड आयेंगें उतना व्यवहार पल्य होता है



- पुन: उन एक एक रोमखण्ड को 100 - 100 वर्ष जाने पर निकालेंगें, तो जितने काल में वे सब समाप्त होंगें वो व्यवहार पल्य का काल है
- अर्थात् रोमों की संख्या में
   100 वर्ष का गुणा करने पर
   व्यवहार पल्य का काल आयेगा



# रोमों की संख्या

 $18 = x 65 = x 18 x 19 x 10^{18}$ 

अथवा

 $(65536)^5 \times 18 \times 19 \times 10^{18}$ 

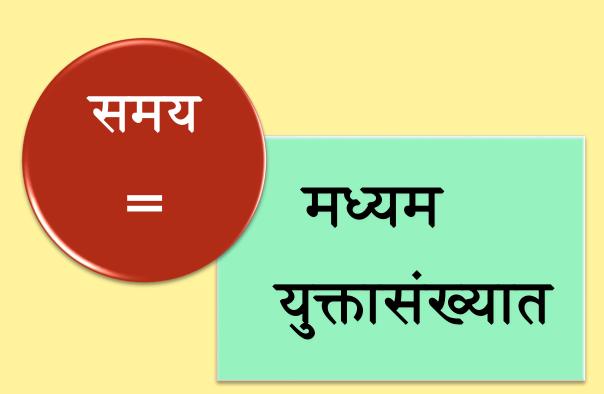
## व्यवहार पल्य के वर्ष

# 45 अंक प्रमाण x 100 वर्ष = 47 अंक प्रमाण वर्ष = संख्यात वर्ष

## व्यवहार पल्य



संख्यात



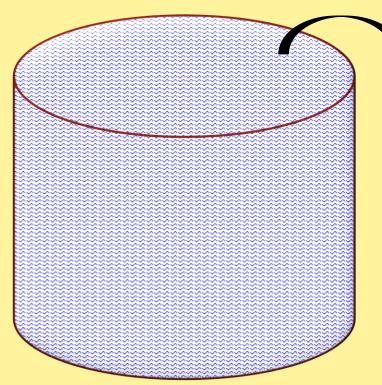
## व्यवहार पल्य के समय समूह का प्रमाण

45 अंक प्रमाण बालाग्र x 100 वर्ष x 2 अयन x 3 ऋतु x 2 मास x 30 अहोरात्रि x 30 मुहूर्त x संख्यात हजार करोड़ आविल x ज.युक्तासंख्यात समय

#### उद्धार पल्य

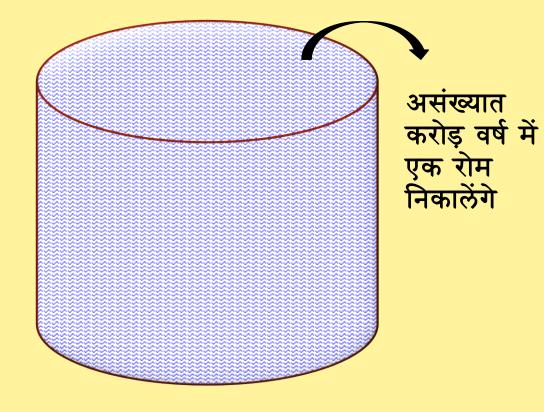
- व्यवहार पल्य की रोम राशि में से प्रत्येक रोम खण्ड के,
- असंख्यात वर्षों के जितने समय हो उतने खण्ड करके,
- उनसे दूसरे पल्य को भरकर पुन: एक-एक समय में एक-एक रोम खण्ड निकालें।
- इस प्रकार जितने समय में वह दूसरा पल्य खाली होता है, उतना काल उद्धार पल्य का है।

#### उद्धार पल्य



प्रतिसमय एक रोम निकालेंगे

अथवा



असंख्यात करोड़ वर्ष में जितने समय होते हैं उतने एक रोम के टुकड़े करेंगे

#### उद्धार पल्य

व्यवहार पत्य की रोम संख्या x असंख्यात वर्षों के समय = उद्धार पत्य के समय अर्थात् असंख्यात वर्ष

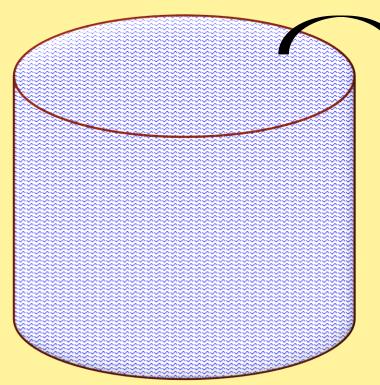
## द्वीप-समुद्रों की संख्या

- 25 कोड़ाकोड़ी उद्धार पल्यों के समय प्रमाण मध्य-लोक में द्वीप-समुद्रों की संख्या है याने
- 25 कोड़ाकोड़ी x 1 उद्धार पल्यों के समय = कुल द्वीप-समुद्र याने
- 25 x  $10^{14}$  x 1 उद्धार पत्य = कुल द्वीप-समुद्र
  - ० (उद्धार पल्य से गुणा किया याने उसमें आने वाले समयों की संख्या से गुणा किया)

#### अद्धा पल्य

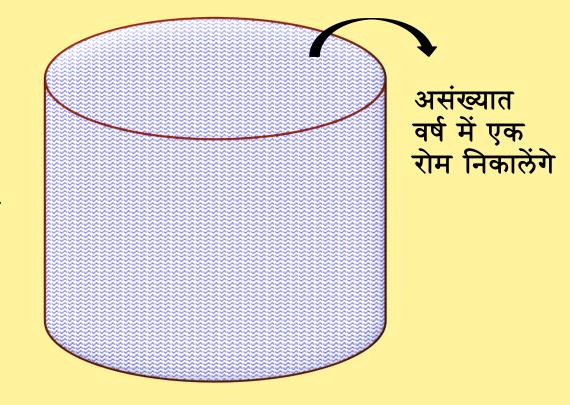
- उद्धार पल्य की रोम राशि में से प्रत्येक रोम खण्ड के,
- असंख्यात वर्षों के जितने समय हो उतने खण्ड करके,
- उनसे दूसरे पल्य को भरकर पुन: एक-एक समय में एक-एक रोम खण्ड निकालें।
- इस प्रकार जितने समय में वह दूसरा पल्य खाली होता है, उतना काल अद्धा पल्य का है।

#### अद्धा पल्य



प्रति समय एक रोम निकालेंगे

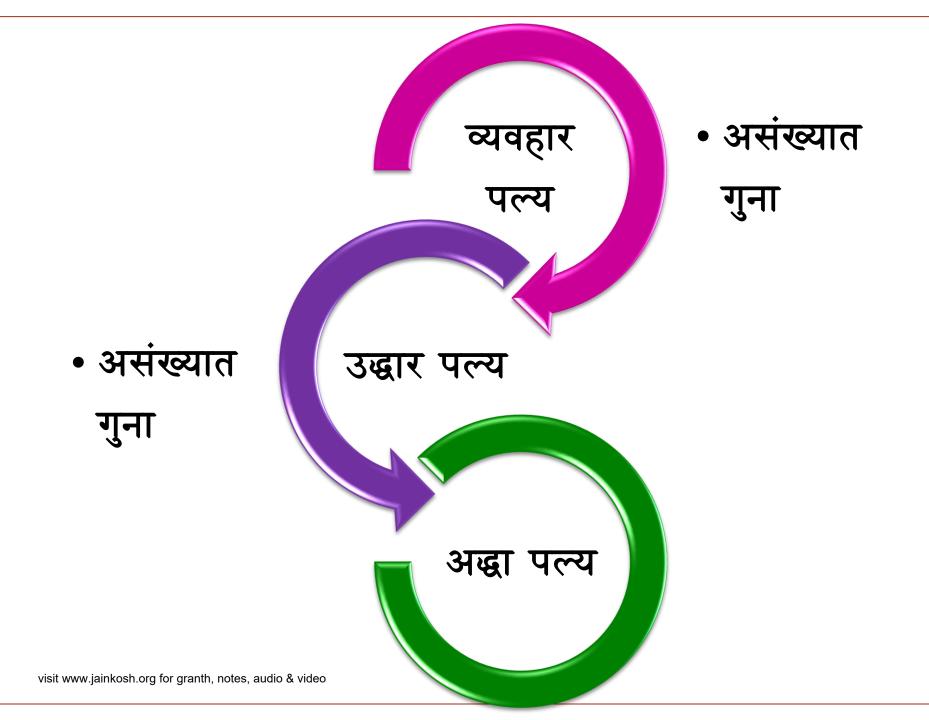
अथवा



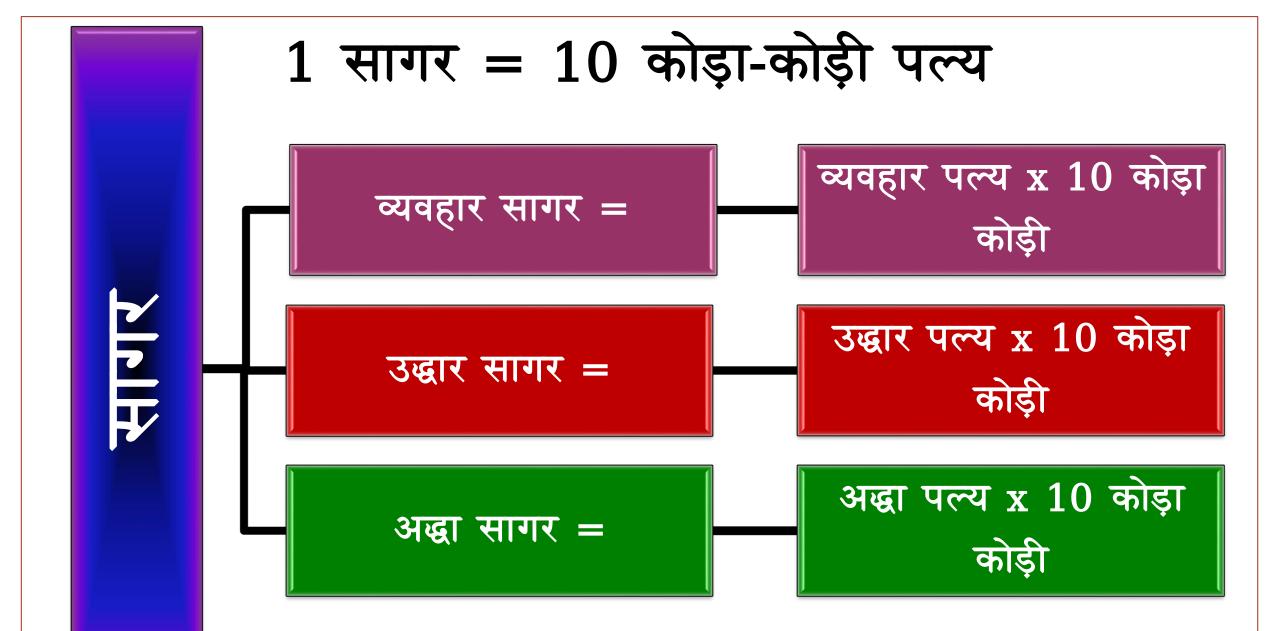
असंख्यात वर्ष में जितने समय होते हैं उतने एक रोम के टुकड़े करेंगे

#### अद्धा पल्य

उद्धार पल्य के समय x असंख्यात वर्षों के समय



Page: 63



## परमाणु

जो सुतीक्ष्ण शस्त्र से भी छेदने-भेदने और मोड़ने के लिए अशक्य है

जल, अग्नि आदि से नाश को प्राप्त नहीं होता

1 रस, 1 गंध, 1 रूप और 2 स्पर्श - ऐसे 5 गुण संयुक्त है

शब्दरूप स्कंध का कारण है किन्तु स्वयं शब्द नहीं है

आदि, मध्य और अंत से रहित है

बहुप्रदेशी न होने से अप्रदेशी है

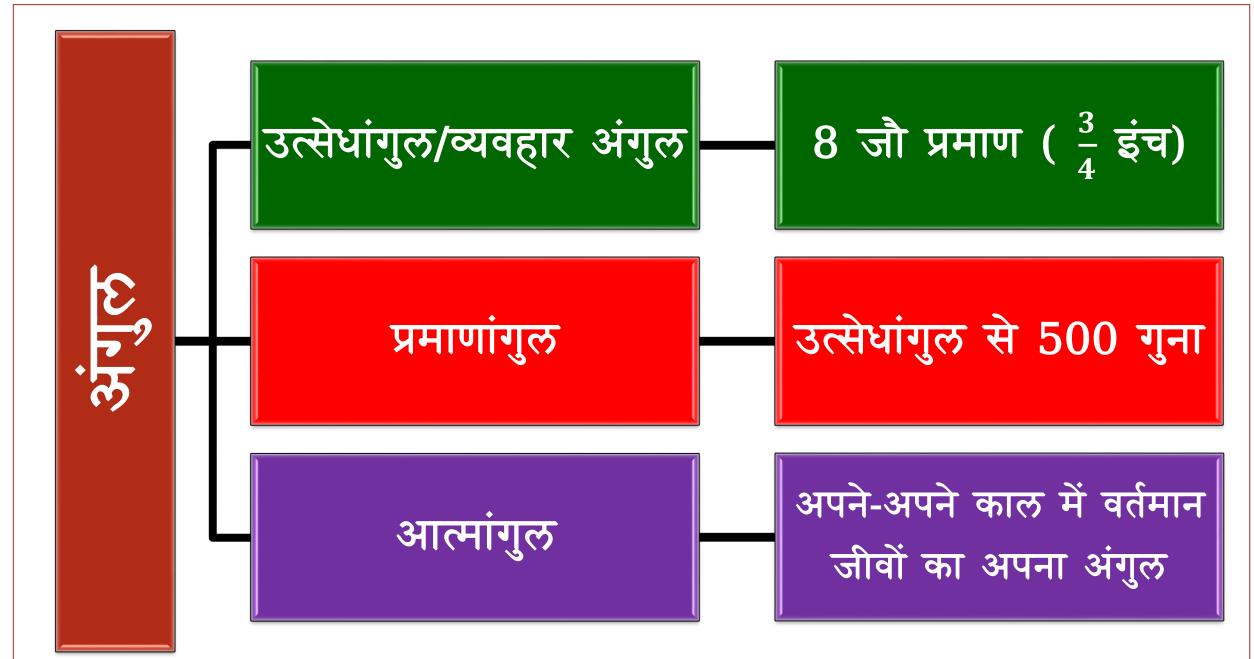
इन्द्रियों के द्वारा जानने के अयोग्य है

जिसका विभाग नहीं हो सकता है उस द्रव्य को परमाणु कहते हैं।

visit www.jainkosh.org for granth, notes, audio & video

## उत्सेधांगुल का विधान

अनंतानंत परमाणु	= स्कंध = अवसन्नासन्न
8 अवसन्नासन्न	= सन्नासन्न
8 सन्नासन्न	= तृटरेणु
8 तृटरेणु	= त्रसरेणु
8 त्रसरेणु	= रथरेणु
8 रथरेणु	= उत्तम भोगभूमि बालाग्र
8 उत्तम भोगभूमि बालाग्र	= मध्यम भोगभूमि बालाग्र
8 मध्यम भोगभूमि बालाग्र	= जघन्य भोगभूमि बालाग्र
8 जघन्य भोगभूमि बालाग्र	= कर्मभूमि का बालाग्र
8 कर्मभूमि का बालाग्र	= 1 ਨੀख
8 लीख	= सरसों
8 सरसों	= जौ
8 जौ	= 1 अंगुल (सूच्यंगुल/ उत्सेधांगुल)
w.jainkosh.org for granth, notes, audio & video	



# किस अंगुल से क्या नापा जाता है?

उत्सेधांगुल/व्यवहार अंगुल

प्रमाणांगुल

आत्मांगुल

शरीर की अवगाहना, नगरों, विमानों की ऊँचाई आदि

द्वीप, समुद्र, पर्वत, नदी आदि अकृत्रिम रचनायें

अपने-अपने काल के बर्तन, झारी, कलश इत्यादि

#### सूच्यंगुल (प्रमाणांगुल)

- सूच्यंगुल = (अद्धा पत्य) अद्धा पत्य के अर्धच्छेद
- = सूच्यंगुल में प्रदेशों की संख्या
- प्रतरांगुल = सूच्यंगुल x सूच्यंगुल
- घनांगुल = सूच्यंगुल x सूच्यंगुल x सूच्यंगुल
- Ex माना सू. = 16, तो प्र = 256, घ = 4096
- 500 उत्सेध अंगुल प्रमाण, अवसर्पिणी काल के प्रथम चऋवर्ती भरत के एक अंगुल का नाम ही प्रमाणांगुल है
  - ं अर्थच्छेद = किसी राशि को जितनी बार आधा-आधा करने पर 1 शेष रहे
  - Ex = 64 के अर्थच्छेद = 64,32,16,8,4,2,1 = 6 अर्थच्छेद



= (अद्धा पत्य)अद्धा पत्य के अर्धच्छेद

प्रतरांगुल

= (सूच्यंगुल)  $^2$ 

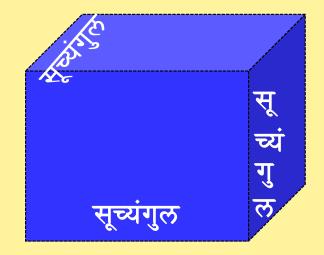
घनांगुल

 $=(सूच्यंगुल)^3$ 

## 3 अंगुल

सूच्यंगुल

सू च्य गु ल सूच्यंगुल



प्रतरांगुल

घनांगुल

## योजन का विधान

6 अंगुल	1 पाद
2 पाद	1 विलस्त
2 विलस्त	1 हाथ
4 हाथ	1 धनुष
2000 धनुष	1 कोस
4 कोस	1 योजन (व्यवहार योजन)
4 कोस x 500 = 2000 कोस	1 योजन (प्रमाण योजन)
visit www.jainkosh.org for granth, notes, audio & video	Page: 72

## जगत्श्रणी

- = (घनांगुल) पत्य के अर्धच्छेद का असंख्यातवा भाग = (घनांगुल) पत्य के अर्धच्छेद/असंख्यात
- = 7 राजू
- = 7 राजू प्रमाण आकाश की 1 प्रदेश की 1 पंक्ति में प्रदेशों की संख्या

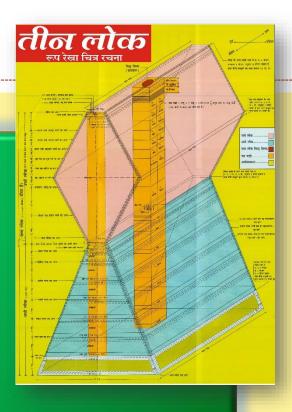
#### जगत्प्रतर

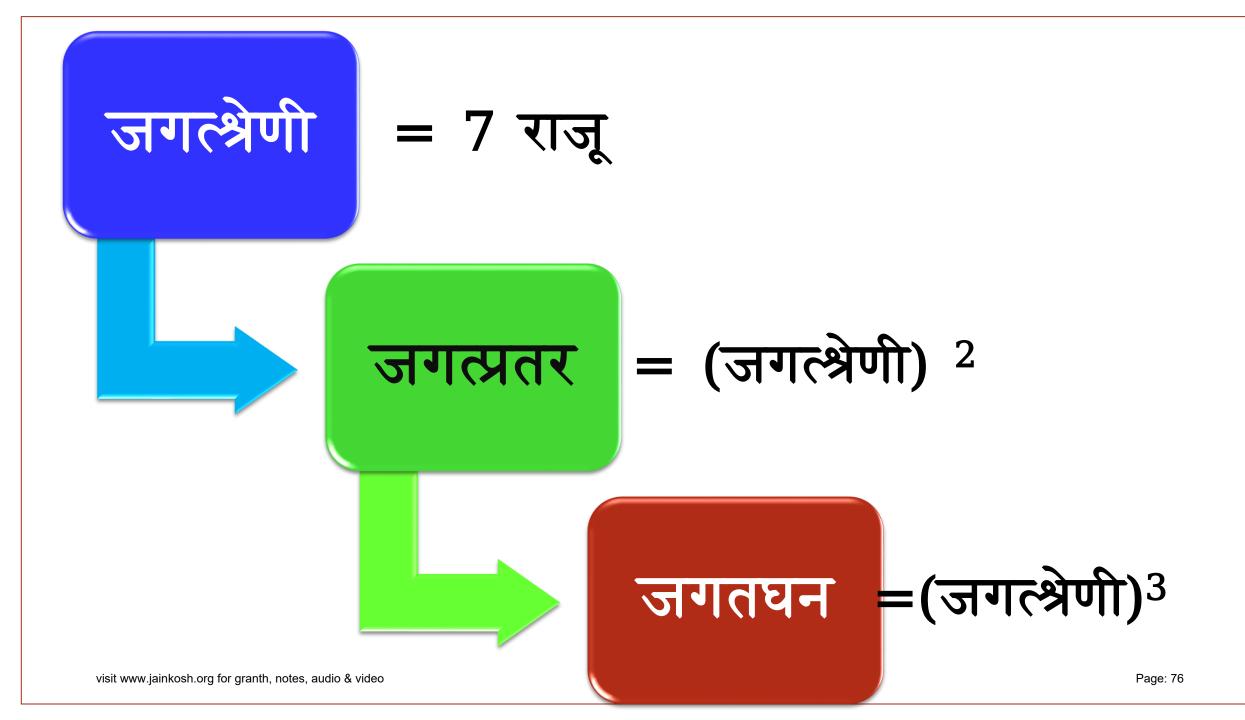
= (जगत्श्रेणी)<sup>2</sup>

=जगत्श्रेणी x जगत्श्रेणी

#### जगतघन

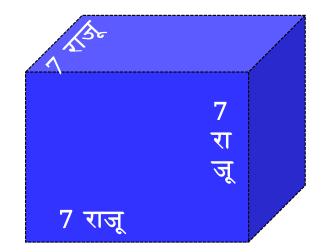
- = जगत्श्रेणी x जगत्श्रेणी x जगत्श्रेणी
- = ( जगत्श्रेणी )<sup>3</sup>
- = लोक के प्रदेशों की संख्या
- = 1 जीव के प्रदेशों की संख्या
- = मध्यम असंख्यातासंख्यात





7 राजू

7 रा जू 7 राजू



जगत्श्रेणी

जगत्प्रतर

जगतघन

## अलौकिक मान

#### मान

द्रव्य मान

क्षेत्र मान

काल मान

भाव मान

visit www.jainkosh.org for granth, notes, audio & video

## जघन्य

1 परमाणु

1 प्रदेश

1 समय

सूक्ष्म निगोदिया लिब्धे अपर्याप्तक के ज्ञान के अविभाग-प्रतिच्छेद

## उत्कृष्ट

सभी द्रव्यों का प्रमाण

संपूर्ण आकाश के प्रदेश

तीन काल के समय प्रमाण

केवलज्ञान के अविभाग-प्रतिच्छेद्ध<sub>78</sub> > Reference : श्री त्रिलोकसारजी, सम्यग्ज्ञान चंद्रिका जीवकाण्ड जी

## Presentation developed by Smt. Sarika Vikas Chhabra

For updates / corrections / feedback / suggestions, please contact:

- sarikam.j@gmail.com
- > www.jainkosh.org
- **2:** 0731-2410880, 94066-82889